International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 18-01-2019; Accepted: 22-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 56-59

रीवा जिला में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

मोनिका सिंह[1], डॉ० शाहेदा सिद्दीकी[2]
[1] शोध छात्रा, समाजशास्त्र, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा रीवा जिला में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं से शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र के 67.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : रीवा जिला, महिला शिक्षा, विकास, आर्थिक सशक्तीकरण।

1. प्रस्तावना
किसी देश के सामाजिक आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। महिलाएँ समाज का अभिन्न अंग हैं। अतः महिलाओं का विकास करके ही सार्वभौमिक विकास की कल्पना को साकार करना संभव हैं। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने भी इसी तथ्य की पुष्टि करते कहा हैं कि यदि आपको विकास करना हैं तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जाएगा। वर्तमान युग में महिलाओं को सशक्त बनाने, उनकी क्षमताओं और कौशल का विकास करने हेतु विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश की अधिकांश महिलाएं विशेष तौर पर ग्रामीण गरीब महिलाएं निरक्षर, रूढ़िवादी एवं परम्परागत बंधनों में जकड़ी हुई थी। घर की चार दीवारी तक सीमित ग्रामीण महिलाएं अनेक प्रकार की कुरीतियों व कुप्रथाओं यथा बाल विवाह प्रथा व दहेज का दंश झेल रहीं थी। समाज में विद्यमान महिला पुरूष भेदभाव का कारण ग्रामीण गरीब महिलाओं को विविध प्रकार के अत्याचार, अनाचार, तिरस्कार व उपेक्षा आदि का सामना करना पड़ता था। किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् सरकार ने ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाने, उनके समग्र व संकलित विकास को सुनिश्चित करनें व उनके विकास की मुख्यधारा में समावेशित करने हेतु अनेक विधियां, उपाय, कल्याणकारी योजनाओं व विकास कार्यक्रमों को मूर्त रूप प्रदान किया। यहीं नहीं, महिलाओं को सशक्त, अधिकार संपन्न व जागरूक बनाने हेतु देश के संविधान के अनुच्छेंद 39 में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राज्य अपनी नीति का संचलान करेगा तथा सुनिश्चित करेगा कि पुरूष और स्त्री नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो इसके साथ संविधान में महिलाओं को परम्परागत बंधनों से विमुक्त करवाने के लिए विशेष रियायतों व प्रोत्साहनों का भी प्रावधान किया गया है।

किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा को देखकर ज्ञात की जा सकती हैं। स्त्रियों की स्थिति ही वह दृष्टि हैं जो समाज की दशा और दिशा को स्पष्ट करती हैं। स्त्रियाँ ही संतति की परम्परा के निर्वहन में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ :
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
- शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास में आने वाली समस्याओं व अवरोधों का पता लगाना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों के महिलाओं से वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – धर प्रांजल (2007)[1], गौरी डॉ कृष्ण चंद्र (2013)[2], सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002)[3], चौधरी कल्पना (2009)[4], देवपुरा प्रतापमल (2005)[5]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेष का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	विकासखण्डों के नाम	उत्तरदाताओं की संख्या	महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ रहा है		नही पड़ रहा है		नही पता	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	रीवा	100	88	88.00	07	07.00	05	05.00
2.	रायपुर–कर्चुलियान	100	64	64.00	16	16.00	20	20.00
3.	गंगेव	100	77	77.00	13	13.00	10	10.00
4.	सिरमौर	100	62	62.00	14	14.00	24	24.00
5.	मऊगंज	100	60	60.00	15	15.00	25	25.00
6.	नईगढ़ी	100	65	65.00	20	20.00	15	15.00
7.	हनुमना	100	72	72.00	18	18.00	10	10.00
8.	त्योंथर	100	62	62.00	20	20.00	18	18.00
9.	जवा	100	55	55.00	20	20.00	25	25.00
योग		900	605	67.22	143	15.89	152	16.89

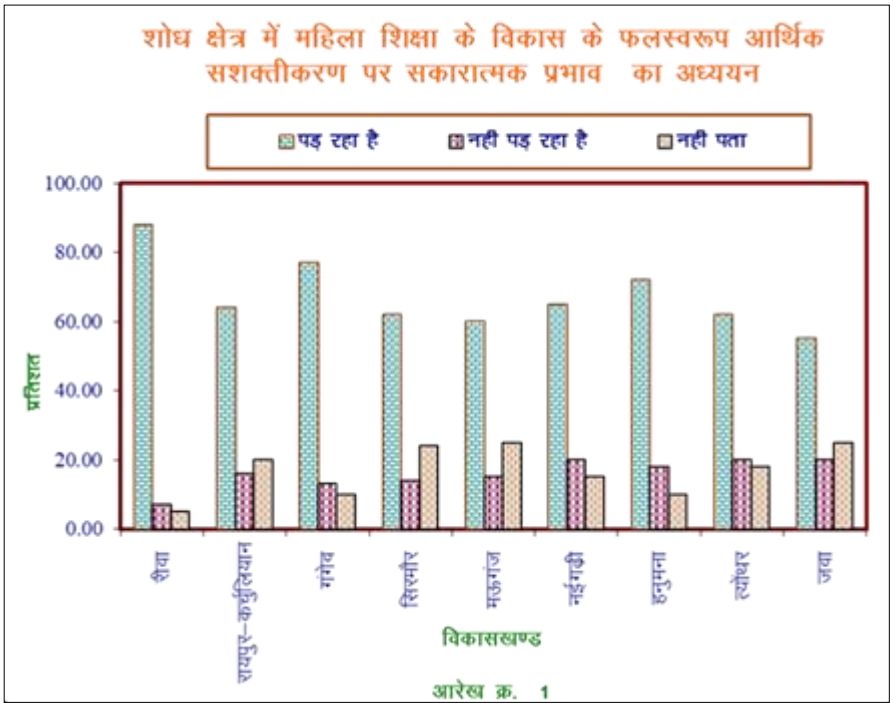

आरेख क्र. 1

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं से शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के आँकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित कुल 900 उत्तरदाताओं में से 605 ने यह माना हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 143 ने यह माना है, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 152 को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

इस प्रकार यह अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 67.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 15.89 प्रतिशत यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 16.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की सार्थकता का अध्ययन

समूह		ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
समूह की संख्या (N)		450	450
मध्यमान (M)		28.24	29.13
मानक विचलन (SD)		9.22	7.85
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–1.56	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (450-1) + (450-1) = 449+449 =898

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.24 है तथा मानक विचलन 9.22 है। शहरी क्षेत्रों में सार्थकता का औसत उपलब्धि 29.13 है तथा मानक विचलन 7.85 है।

898 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –1.56 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैः

- शोध क्षेत्र के 67.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 15.89 प्रतिशत यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 16.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।
- शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.24 है तथा मानक विचलन 9.22 है। शहरी क्षेत्रों में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 29.13 है तथा मानक विचलन 7.85 है। 898 क ि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान –1.56 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप आर्थिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. संदर्भ

1. धर प्रांजल, महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका मार्च 2007, ए विंग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
2. गौरी डॉ कृष्ण चंद्र, ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, अगस्त 2013, प्रकाशक, 'ए' विंग गेट 5; निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
3. सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002) – महिला सशक्तिकरण और दलित महिला डॉ. आम्बेडकर सामाजिक विज्ञान।
4. चौधरी कल्पना (2009), भारतीय महिलाएँ और वानिकी सहकारिता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली – 110002।
5. देवपुरा प्रतापमल, महिला सशक्तीकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, मार्च 2005, ए विग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।